RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
अगस्त
22
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

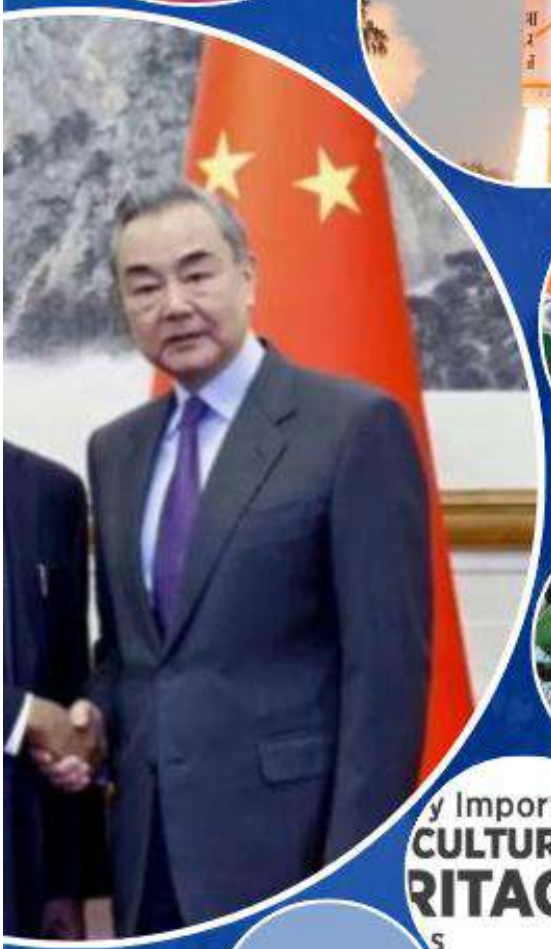

y Important
CULTURAL
RITAGE
s

By Ankit Avasthi Sir

ऑनलाइन गेमिंग बिल 2025 / Online Gaming Bill 2025

संदर्भ:

ऑनलाइन गेमिंग उद्योग के लिए बड़ा झटका देते हुए संसद ने प्रमोशन एंड रेगुलेशन ऑफ ऑनलाइन गेमिंग बिल 2025 पास कर दिया है, जिसके तहत ड्रीम-11, रमी, पोकर जैसे सभी रियल-मनी बेस्ड ऑनलाइन गेम्स पर प्रतिबंध लग सकता है। लोकसभा में 20 अगस्त और राज्यसभा में 21 अगस्त को पारित इस बिल का मकसद ऑनलाइन गेमिंग को रेगुलेट करना और पैसे से जुड़े खेलों पर पूरी तरह रोक लगाना है।

ऑनलाइन गेमिंग को सरकार ने दो श्रेणियों में बांटा:

सरकार ने ऑनलाइन गेमिंग को दो स्पष्ट श्रेणियों में विभाजित किया है- **ई-स्पोर्ट्स (E-Sports) और रियल मनी गेम्स (Real Money Games)।**

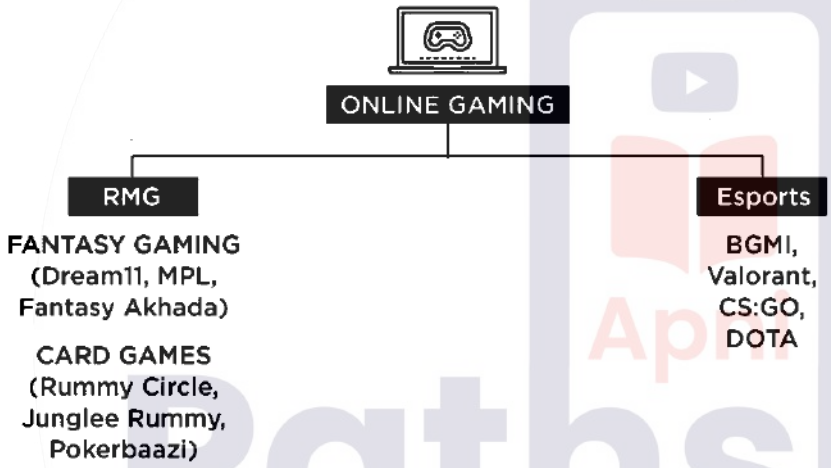

ई-स्पोर्ट्स और रियल मनी गेम्स

ई-स्पोर्ट्स (E-Sports)

परिभाषा: ऐसे वीडियो गेम जिनमें खेलने के लिए पैसों या किसी दांव-शर्त का इस्तेमाल नहीं होता।

- **सरकारी प्रोत्साहन**:
  - सरकार ई-स्पोर्ट्स को बढ़ावा देने की योजना बना रही है।
  - अब इन्हें **प्रोफेशनल टूर्नामेंट** और **प्रतियोगिताओं** के रूप में भी मान्यता दी जा रही है।
- **लोकप्रिय गेम्स**: GTA, Call of Duty, BGMI, Free Fire आदि।

रियल मनी गेम्स (Real Money Games)

परिभाषा: ऐसे गेम जिनमें खिलाड़ी सीधे पैसों का उपयोग करते हैं।

- **कैसे खेला जाता है:**
  - पैसा कार्ड, UPI या वॉलेट से लगाया जाता है।
  - जीतने पर सीधे अकाउंट में कैश ट्रांसफर होता है।
  - इसमें केवल **वास्तविक धन (Real Money)** का लेन-देन होता है, न कि वर्चुअल रिवॉर्ड।
- **भारत में इंडस्ट्री:** यह इंडस्ट्री लाखों-करोड़ रुपये की हो चुकी है।
- **लोकप्रिय गेम्स:** रम्मी, फैंटेसी क्रिकेट, लूडो आदि।

सरकार रियल मनी गेम्स पर लगाएगी सख्त प्रतिबंध

सरकार रियल मनी गेम्स के तहत कई स्तरों पर कड़े प्रावधान किए जाएंगे –

1. **बैंकिंग लेन-देन पर रोक:** इसके जरिए सीधे वित्तीय लेन-देन को बैंकिंग प्रणाली से रोक दिया जाएगा।
2. **विज्ञापन और प्रचार पर प्रतिबंध:** इन गेम्स के किसी भी प्रकार के विज्ञापन और प्रचार-प्रसार पर पूरी तरह रोक होगी।
3. **अवैध गेमिंग प्लेटफॉर्म्स पर कार्रवाई:** बिना रजिस्ट्रेशन वाले प्लेटफॉर्म्स को अवैध माना जाएगा।
   - निगरानी के लिए एक **स्वतंत्र नियामक प्राधिकरण** बनाया जाएगा।
4. **कठोर दंड का प्रावधान**
   - अवैध गेमिंग प्लेटफॉर्म चलाने वालों को **3 साल की जेल** या **1 करोड़ रुपये जुर्माना**।
   - विज्ञापन करने वालों को **2 साल की जेल** या **50 लाख रुपये जुर्माना**।
   - वित्तीय संस्थान यदि इसमें शामिल पाए जाते हैं, तो **3 साल की जेल** या **1 करोड़ रुपये जुर्माना**।
5. **बार-बार अपराध पर सख्ती**
   - दोहराए गए अपराधों में और लंबी जेल की सजा व ज्यादा जुर्माना। कुछ अपराध **गैर-जमानती** होंगे।
6. **अधिकारियों के विशेष अधिकार**
   - संपत्ति जब्त करने का अधिकार।
   - बिना वारंट गिरफ्तारी करने का अधिकार।

भारत में ऑनलाइन गेमिंग इंडस्ट्री

तेजी से बढ़ता सेक्टर – भारत में ऑनलाइन गेमिंग का विस्तार बहुत तेज़ी से हुआ है।

- 2020 में गेमर्स की संख्या: **36 करोड़**
- 2024 तक गेमर्स की संख्या: **50 करोड़+**

रियल मनी गेमिंग (RMG) का प्रभाव –

- लगभग **45 करोड़ लोग हर साल** इसमें भाग लेते हैं।
- इनसे खिलाड़ियों को लगभग **20,000 करोड़ रुपये का नुकसान** होता है।

भारत-चीन विशेष प्रतिनिधियों की वार्ता / India China Special Representatives' Dialogue

संदर्भ:

भारत और चीन के बीच हाल ही में **विशेष प्रतिनिधि वार्ता का 24वां दौर** आयोजित किया गया। यह वार्ता द्विपक्षीय संबंधों में स्थिरता, सीमा मुद्दों के समाधान और आपसी विश्वास को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम मानी जा रही है। दोनों देशों के बीच यह संवाद ऐसे समय में हुआ है जब सीमा पर शांति और स्थिरता कायम रखना, साथ ही राजनीतिक व आर्थिक सहयोग को आगे बढ़ाना, साझा प्राथमिकताओं में शामिल है।

संवाद के मुख्य परिणाम-

1. व्यापार और संपर्क:

- भारत और चीन के बीच **सीधी उड़ानें फिर से शुरू** होंगी।
- **पर्यटकों, व्यवसायियों, मीडिया और अन्य वर्गों** के लिए वीज़ा सुविधा दी जाएगी।
- सीमा व्यापार फिर से शुरू होगा –
  - **लिपुलेख दर्रा, शिपकी ला दर्रा, नाथु ला दर्रा**
- व्यापार और निवेश प्रवाह को बढ़ावा मिलेगा। चीन ने भारत की प्रमुख चिंताओं पर ध्यान दिया जैसे-
  - उर्वरक, दुर्लभ खनिज, टनल बोरिंग मशीनें

2. जन संपर्क को बढ़ावा:

- **कैलाश मानसरोवर यात्रा** फिर से शुरू होगी।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान** पर सहमति बनी।
- वर्ष **2026 में भारत में तीसरी उच्च स्तरीय तंत्र बैठक (High-Level Mechanism)** आयोजित होगी।

3. अंतर-सीमा नदियों पर सहयोग:

- चीन ने आपातकालीन स्थिति में **हाइड्रोलॉजिकल डाटा साझा करने** पर सहमति जताई।
- भारत ने चीन की **यारलुंग सांगपो (ब्रह्मपुत्र) पर मेगा बांध निर्माण** को लेकर चिंता जताई।

यात्रा का महत्व

- **75वीं वर्षगांठ:** वर्ष 2025 भारत-चीन के राजनयिक संबंधों की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ है। दोनों देशों ने इस अवसर को नए सहयोग के साथ मनाने का संकल्प लिया।
- **भारत–चीन रीसेट:** यह मेल-मिलाप 2020 की झड़पों के बाद सैन्य और कूटनीतिक गतिरोध को समाप्त करने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है।
- **कज़ान बैठक 2024:** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग की कज़ान बैठक को संबंध सुधारने वाला निर्णायक मोड़ माना गया।
- **भूराजनीतिक पृष्ठभूमि:** यह मेल-मिलाप ऐसे समय में हो रहा है जब अमेरिका द्वारा हाल ही में लगाए गए टैरिफ के चलते भारत-अमेरिका व्यापारिक संबंध कमजोर हो रहे हैं।
- **मल्टीपोलैरिटी (बहुध्रुवीयता) पर ज़ोर:** भारत और चीन दोनों ने बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों देश एकतरफ़ावाद और पश्चिमी वर्चस्व का विरोध करना चाहते हैं।

संबंधों में चुनौतियाँ

1. **सीमा विवाद:** विभिन्न समझौतों और वार्ताओं के बावजूद वास्तविक सीमा विवाद अब तक सुलझ नहीं पाया है।
2. **विश्वास की कमी:** गालवान की घटना और 2013 से लगातार सीमा उल्लंघन (Depsang, Doklam, Pangong Tso) ने भारतीय नीति-निर्माताओं में अविश्वास की भावना को बनाए रखा है।
3. **ब्रह्मपुत्र पर चीन की गतिविधियाँ:** चीन के मेगा-डैम प्रोजेक्ट भारत के लिए पर्यावरणीय और सुरक्षा दृष्टि से चिंता का विषय बने हुए हैं।
4. **वैश्विक समीकरण:** अमेरिका, रूस और चीन के बीच भारत की रणनीतिक संतुलन नीति बेहद नाजुक बनी हुई है।
5. **चीन–पाकिस्तान कारक:** चीन और पाकिस्तान की नज़दीकी, विशेषकर *चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC)* परियोजना, भारत के लिए गहरी चिंता का विषय है।

आगे की राह:

1. **बहुपक्षीय सहयोग** – SCO, BRICS, G20 जैसे मंचों पर साझेदारी मज़बूत करें।
2. **नदी पारदर्शिता** – आँकड़े साझा कर सीमा-पार जल परियोजनाओं में विश्वास बढ़ाएँ।
3. **सीमा संवाद** – LAC पर तनाव घटाकर शांति सुनिश्चित करें।
4. **आर्थिक संतुलन** – व्यापार व निवेश आपसी लाभकारी हों, अति-निर्भरता से बचें।

अग्नि-5 / Agni-5

संदर्भ:

भारत ने अपनी पहली इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-5 का सफल परीक्षण कर लिया है। यह परीक्षण बुधवार को ओडिशा के चांदीपुर स्थित इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज में किया गया। इसे **स्ट्रैटेजिक फोर्सेज कमांड (Strategic Force Command)** की देखरेख में परीक्षण किया गया।

अग्नि-5: भारत की सबसे एडवांस मिसाइल और रणनीतिक अहमियत:

भारत ने अपनी रक्षा क्षमता को और मज़बूत करते हुए **इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल (ICBM) अग्नि-5** का सफल परीक्षण किया है। यह DRDO द्वारा विकसित अत्याधुनिक मिसाइल है, जिसकी रेंज **5,000 किमी से अधिक** है।

प्रमुख विशेषताएँ:

- **MIRV तकनीक:** एक साथ कई टारगेट नष्ट करने की क्षमता।
- **वॉरहेड क्षमता:** 1.5 टन परमाणु हथियार या 7.5 टन बंकर बस्टर ले जाने में सक्षम।
- **डिज़ाइन:** 17 मीटर लंबी, 2 मीटर चौड़ी, 50 टन वजनी और तीन चरणों वाला ठोस ईंधन।
- **लॉन्च सिस्टम:** रोड-मोबाइल और कैनिस्टराइज्ड, जिससे तुरंत तैनात किया जा सके।
- **नेविगेशन:** रिंग लेज़र जायरोस्कोप और उन्नत गाइडेंस सिस्टम, जो इसे बेहद सटीक बनाते हैं।

रणनीतिक अहमियत:

- पाकिस्तान, चीन, तुर्किये सहित एशिया व यूरोप के हिस्सों तक मार करने में सक्षम।
- दुश्मन के **न्यूक्लियर सिस्टम, रडार, कंट्रोल सेंटर और बंकर** नष्ट करने की ताक़त।
- भारत की **परमाणु प्रतिरोधक क्षमता** और सामरिक स्थिति को मज़बूत करता है।

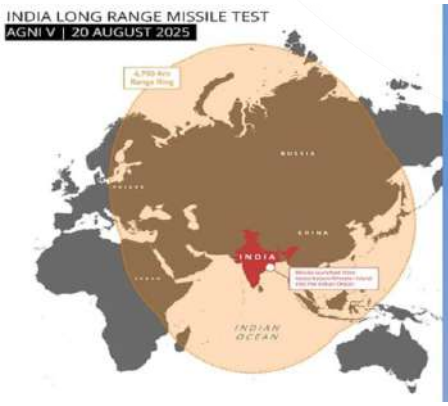

MIRV तकनीक क्या है?

MIRV (Multiple Independently Targetable Reentry Vehicle) तकनीक एक मिसाइल को एक साथ कई अलग-अलग लक्ष्यों पर हमला करने में सक्षम बनाती है।

- एक ही मिसाइल से सैकड़ों किलोमीटर दूर स्थित कई जगहों पर वारहेड गिराए जा सकते हैं।
- इसके लिए ज़रूरी है –
  - इंटरकॉन्टिनेंटल मिसाइलें
  - छोटे और हल्के वारहेड
  - सटीक गाइडेंस सिस्टम
  - अलग-अलग लक्ष्यों पर वारहेड रिलीज की क्षमता

क्यों है खास?

- MIRV तकनीक विकसित करना बेहद जटिल है।
- यह एक देश की **सामरिक (Strategic) क्षमता** का महत्वपूर्ण संकेत माना जाता है।
- कुछ ही देशों ने इसे हासिल किया है।

किन देशों के पास है?

- **रूस, चीन, अमेरिका, फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम**
- माना जाता है कि **इजरायल** के पास भी हो सकती है
- **पाकिस्तान** भी इसे विकसित करने की दिशा में काम कर रहा है।

क्या है स्ट्रैटेजिक फोर्सेज कमांड (SFC)?

- **परिभाषा:** स्ट्रैटेजिक फोर्सेज कमांड (SFC) भारत का एकीकृत त्रि-सेवा (थल, जल, वायु) कमांड है। इसका मुख्य कार्य देश के **सामरिक और रणनीतिक परमाणु हथियारों का प्रबंधन और संचालन** करना है।
- **भूमिका:** यह कमांड **न्यूक्लियर कमांड अथॉरिटी (NCA)** के तहत काम करता है और सुनिश्चित करता है कि भारत की सभी परमाणु संपत्तियों पर पूर्ण **कमांड और कंट्रोल** रहे।
- **इतिहास:** SFC की स्थापना **4 जनवरी 2003** को तत्कालीन प्रधानमंत्री **अटल बिहारी वाजपेयी** के नेतृत्व में हुई थी। सभी सामरिक बलों का संचालन इसके अधीन आता है।

रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र की भागीदारी / Private sector participation in defence production

संदर्भ:

भारत में **रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र की भागीदारी रिकॉर्ड** स्तर पर पहुँच गई है। रक्षा उत्पादन विभाग के अनुसार, वित्त वर्ष 2024-25 में कुल ₹1,50,590 करोड़ के रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र का योगदान ₹33,979 करोड़ रहा, जो कुल उत्पादन का 22.56% है। यह 2016-17 के बाद से सबसे उच्च निजी भागीदारी है, जब यह हिस्सा 19% था।

भारत में रक्षा उत्पादन:

- **क्षेत्रीय योगदान:** वित्त वर्ष 2024-25 में रक्षा सार्वजनिक उपक्रमों (DPSUs) ने कुल रक्षा उत्पादन में 57.50% योगदान दिया। भारतीय आयुध कारखानों का योगदान 14.49% और गैर-रक्षा सार्वजनिक उपक्रमों का योगदान 5.4% रहा।
- **रक्षा बजट वृद्धि:** वर्ष 2013-14 में रक्षा बजट ₹2.53 लाख करोड़ था, जो 2025-26 में बढ़कर ₹6.81 लाख करोड़ हो गया।
- **उच्चतम उत्पादन उपलब्धि:** 2024-25 में भारत ने अब तक का सर्वोच्च रक्षा उत्पादन ₹1.50 लाख करोड़ दर्ज किया, जो 2014-15 के ₹46,429 करोड़ से तीन गुना से अधिक है।
- **स्वदेशी उत्पादन में वृद्धि:** वर्तमान में 65% रक्षा उपकरण देश में निर्मित हो रहे हैं। पहले 65-70% उपकरण आयात पर निर्भर थे।
- **भविष्य का लक्ष्य:** भारत का लक्ष्य 2029 तक रक्षा उत्पादन को ₹3 लाख करोड़ तक पहुँचाना है, जिससे देश एक वैश्विक रक्षा विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित हो सके।

रक्षा निर्यात में वृद्धि:

- भारत के रक्षा निर्यात में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2013-14 में जहाँ यह केवल ₹686 करोड़ था, वहीं 2024-25 में बढ़कर ₹23,622 करोड़ हो गया, जो 34 गुना वृद्धि है।
- भारत का रक्षा निर्यात पोर्टफोलियो विविध है, जिसमें बुलेटप्रूफ जैकेट, चेतक हेलीकॉप्टर, तेज गति वाले इंटरसेप्टर बोट्स और हल्के टॉरपीडो शामिल हैं।
- भारत आज 100 से अधिक देशों को रक्षा उपकरण निर्यात करता है। वर्ष 2023-24 में अमेरिका, फ्रांस और आर्मेनिया इसके प्रमुख गंतव्य रहे।

सार्वजनिक और निजी क्षेत्र का योगदान

- कुल रक्षा उत्पादन में सार्वजनिक क्षेत्र (DPSUs और अन्य यूनिट्स) का हिस्सा लगभग 77% है, जबकि निजी क्षेत्र का योगदान 23% है।
- निजी क्षेत्र की भागीदारी लगातार बढ़ रही है, जो FY 2023-24 में 21% से बढ़कर FY 2024-25 में 23% हो गई है।
- DPSUs की ग्रोथ FY 2024-25 में वर्ष-दर-वर्ष (YoY) 16% रही।
- निजी क्षेत्र की ग्रोथ इसी अवधि में 28% YoY रही, जो रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में इसकी बढ़ती भूमिका को दर्शाती है।

नीतिगत सुधार और आत्मनिर्भरता अभियान:

- सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में निरंतर वृद्धि का मुख्य कारण है व्यापक नीतिगत सुधार और ease of doing business उपाय।
- पिछले एक दशक में सरकार ने indigenisation (स्वदेशीकरण) पर विशेष जोर दिया है।
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत पहल ने रक्षा क्षेत्र में आयात पर निर्भरता घटाने और मजबूत घरेलू रक्षा निर्माण पारिस्थितिकी तंत्र तैयार करने में अहम भूमिका निभाई है।

आगे की राह

- **कौशल विकास:** उभरती रक्षा तकनीकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू कर कुशल कार्यबल तैयार करना।
- **संयुक्त उपक्रम:** विदेशी रक्षा कंपनियों के साथ co-development और technology transfer के लिए साझेदारी को बढ़ावा देना।
- **स्टार्ट-अप्स को बढ़ावा देना:** iDEX और ADITI जैसी योजनाओं के तहत रक्षा start-ups को AI, क्वांटम, स्पेस और साइबर क्षेत्रों में सहयोग प्रदान करना।
- **समानअवसर:** पारदर्शी procurement फ्रि लागू कर निजी कंपनियों को DPSUs के साथ निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा का मौका देना।
- **निर्यात तंत्र को मज़बूत करना:** नए वैश्विक बाज़ारों में पहुँच बढ़ाने और निजी कंपनियों को प्रोत्साहन देकर निर्यात गंतव्यों का विविधीकरण करना।

वैश्विक महत्त्वपूर्ण कृषि धरोहर प्रणाली / GIAHS

संदर्भ:

भारत कृषि धरोहर के मामले में वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान रखता है। फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन (FAO) के अनुसार, वर्तमान में भारत में तीन ऐसे "ग्लोबली इम्पॉर्टेंट एग्रीकल्चरल हेरिटेज सिस्टम्स" (GIAHS) मौजूद हैं, जिन्हें वैश्विक कृषि महत्व के रूप में मान्यता दी गई है।

वैश्विक महत्त्वपूर्ण कृषि धरोहर प्रणाली (GIAHS)

- **परिभाषा** : ये सामुदायिक रूप से प्रबंधित कृषि प्रणालियाँ हैं जो कृषि-जैव विविधता, पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत को जोड़कर आजीविका और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं।
- **मान्यता** : FAO द्वारा मान्यता प्राप्त। अब तक 29 देशों में **99 प्रणालियाँ** शामिल की गईं।

हाल की नई शामिल प्रणालियाँ

1. **ताजिकिस्तान** : पहाड़ी कृषि-पशुपालन प्रणाली
2. **दक्षिण कोरिया** : पाइन ट्री एग्रोफॉरेस्ट्री और पारंपरिक बांस-मछली प्रणाली।
3. **पुर्तगाल** : कृषि-वनीकरण-पशुपालन प्रणाली।

भारत की GIAHS प्रणालियाँ

1. **कोरापुट क्षेत्र, ओडिशा**
   - पहाड़ी धान की खेती और स्वदेशी चावल किस्मों की विविधता।
   - औषधीय पौधे और आदिवासी पारंपरिक ज्ञान से जुड़ी धरोहर।
2. **कुट्टनाड प्रणाली, केरल**
   - **समुद्र-स्तर से नीचे खेती का अनोखा मॉडल**।
   - धान के खेत, नारियल बगीचे, अंतर्देशीय मत्स्य पालन और शंख संग्रहण।
3. **कश्मीर की केसर धरोहर**
   - पारंपरिक केसर खेती, अंतरफसली खेती और जैविक पद्धतियाँ।
   - जैव विविधता व मृदा स्वास्थ्य को बढ़ावा।

खारे पानी के मगरमच्छ / Saltwater Crocodiles

संदर्भ:

हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट "Population Assessment and Habitat Ecology Study of Saltwater Crocodiles in Sundarbans 2025" में सुन्दरबन बायोस्फियर रिजर्व (SBR) में साल्टवाटर मगरमच्छों की संख्या में वृद्धि को दर्शाया गया है।

खारे पानी का मगरमच्छ (Crocodylus Porosus)

भारत में खारे पानी के मगरमच्छ उड़ीसा और पश्चिम बंगाल के दलदली क्षेत्रों, नदियों, मैंग्रोव वनों तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के तटीय इलाकों में पाए जाते हैं। यह पृथ्वी पर पाया जाने वाला सबसे बड़ा जीवित सरीसृप (largest living reptile) है।

पारिस्थितिक महत्व (Ecological Significance):

यह एक *hypercarnivorous species* के रूप में पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखता है और मृत जीवों तथा जंगली अवशेषों को खाकर बहते जल को स्वच्छ करता है।

संरक्षण स्थिति (Conservation Status):

- **IUCN स्थिति:** *Least Concern*
- **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972** की अनुसूची-1 में सूचीबद्ध।

भारत में मगरमच्छ की प्रजातियाँ (Crocodiles Species in India):

भारत में मुख्यत: तीन प्रकार के मगरमच्छ पाए जाते हैं –

1. घड़ियाल (Gavialis Gangeticus)
2. खारे पानी का मगरमच्छ (Crocodylus Porosus)
3. मग्गर (Crocodylus Palustris)

उड़ीसा विशेष रूप से अनोखा है क्योंकि यहां तीनों प्रजातियों की जंगली आबादी पाई जाती है।

मन्नार की खाड़ी में प्रवालों (Corals) का पुनरुद्धार

संदर्भ:

तमिलनाडु के तट से लगे मन्नार की खाड़ी में स्थित कोरल रीफ्स ने दो दशकों से अधिक की वैज्ञानिक संरक्षण और पुनर्स्थापन प्रयासों के चलते महत्वपूर्ण पुनर्जीवन देखा है।

प्रवाल (Corals) के बारे में

- **परिचय:** प्रवाल (Corals) अकशेरुकी जीव हैं, जो *Cnidaria* नामक बड़े समूह के अंतर्गत आते हैं।
- **निर्माण:** प्रवाल छोटे-छोटे कोमल जीवों (*polyps*) से बनते हैं। ये जीव सुरक्षा हेतु अपने चारों ओर चूने जैसा कठोर आवरण (कैल्शियम कार्बोनेट) बनाते हैं।
- **प्रवाल भित्तियाँ (Coral Reefs):** असंख्य *polyps* मिलकर विशाल कार्बोनेट संरचनाएँ बनाते हैं, जिन्हें प्रवाल भित्तियाँ कहते हैं।
- **रूप-रंग (Appearance):** प्रवाल लाल से लेकर बैंगनी और नीले रंग तक पाए जाते हैं, लेकिन प्राय: भूरे और हरे रंग की छाया में अधिक मिलते हैं।

भारत में प्रवाल भित्तियाँ

- कच्छ की खाड़ी (*Gulf of Kutch*)
- मन्नार की खाड़ी (*Gulf of Mannar*)
- अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह
- लक्षद्वीप द्वीप
- मालवन क्षेत्र

मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar)

- **विशेषता:** यह भारत के प्रवाल-समृद्ध क्षेत्रों में से एक है, जो लगभग 100 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली है। यहाँ प्रवाल की लगभग 117 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- **स्थान:** यह लाक्षद्वीप सागर का एक उथला बड़ा खाड़ी क्षेत्र है, जो भारत के दक्षिण-पूर्वी छोर और श्रीलंका के पश्चिमी हिस्से के बीच स्थित है।
- **सीमाएँ:**
  - रामेश्वरम द्वीप
  - आदम (रामसेतु) ब्रिज – छोटे-छोटे टापुओं और रेत के टीले की श्रृंखला
  - मन्नार द्वीप
- **आकार:** लगभग 130–275 किमी चौड़ी और 160 किमी लंबी।

यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन / EAEU

संदर्भ:

भारत और यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU) ने फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (FTA) वार्ता शुरू करने के लिए टर्म्स ऑफ रेफरेंस (ToR) पर हस्ताक्षर किए हैं।

यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU) के बारे में

- **स्वरूप:** यह एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जो पूर्व सोवियत देशों के बीच क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण (Regional Economic Integration) को बढ़ावा देता है।
- **स्थापना:** *यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन संधि* (Treaty on the Eurasian Economic Union) के माध्यम से गठित। यह संधि **29 मई 2014** को हस्ताक्षरित हुई और **1 जनवरी 2015** से प्रभावी हुई।
- **सदस्य देश:** इस संघ में कुल **5 देश** शामिल हैं – **रूस, बेलारूस, कज़ाख़स्तान, किर्गिस्तान और आर्मेनिया**।

भारत और यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU) व्यापार संबंध:

- **व्यापार:** वर्ष 2024 में भारत और EAEU के बीच व्यापार 69 अरब अमेरिकी डॉलर रहा, जो 2023 की तुलना में 7% अधिक है।
- **संयुक्त GDP:** भारत और EAEU देशों की कुल जीडीपी 6.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है।

ऑनलाइन गेमिंग बिल 2025 / Online Gaming Bill 2025

संदर्भ:

ऑनलाइन गेमिंग उद्योग के लिए बड़ा झटका देते हुए संसद ने प्रमोशन एंड रेगुलेशन ऑफ ऑनलाइन गेमिंग बिल 2025 पास कर दिया है, जिसके तहत ड्रीम-11, रमी, पोकर जैसे सभी रियल-मनी बेस्ड ऑनलाइन गेम्स पर प्रतिबंध लग सकता है। लोकसभा में 20 अगस्त और राज्यसभा में 21 अगस्त को पारित इस बिल का मकसद ऑनलाइन गेमिंग को रेगुलेट करना और पैसे से जुड़े खेलों पर पूरी तरह रोक लगाना है।

ऑनलाइन गेमिंग को सरकार ने दो श्रेणियों में बांटा:

सरकार ने ऑनलाइन गेमिंग को दो स्पष्ट श्रेणियों में विभाजित किया है- **ई-स्पोर्ट्स (E-Sports) और रियल मनी गेम्स (Real Money Games)।**

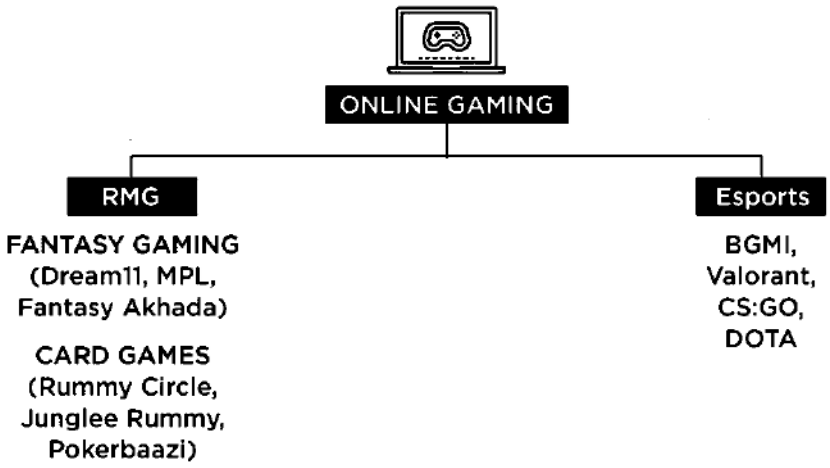

ई-स्पोर्ट्स और रियल मनी गेम्स

ई-स्पोर्ट्स (E-Sports)

परिभाषा: ऐसे वीडियो गेम जिनमें खेलने के लिए पैसों या किसी दांव-शर्त का इस्तेमाल नहीं होता।

- **सरकारी प्रोत्साहन**:
  - सरकार ई-स्पोर्ट्स को बढ़ावा देने की योजना बना रही है।
  - अब इन्हें **प्रोफेशनल टूर्नामेंट** और **प्रतियोगिताओं** के रूप में भी मान्यता दी जा रही है।
- **लोकप्रिय गेम्स**: GTA, Call of Duty, BGMI, Free Fire आदि।

रियल मनी गेम्स (Real Money Games)

परिभाषा: ऐसे गेम जिनमें खिलाड़ी सीधे पैसों का उपयोग करते हैं।

- **कैसे खेला जाता है:**
  - पैसा कार्ड, UPI या वॉलेट से लगाया जाता है।
  - जीतने पर सीधे अकाउंट में कैश ट्रांसफर होता है।
  - इसमें केवल **वास्तविक धन (Real Money)** का लेन-देन होता है, न कि वर्चुअल रिवॉर्ड।
- **भारत में इंडस्ट्री:** यह इंडस्ट्री लाखों-करोड़ रुपये की हो चुकी है।
- **लोकप्रिय गेम्स:** रम्मी, फैंटेसी क्रिकेट, लूडो आदि।

सरकार रियल मनी गेम्स पर लगाएगी सख्त प्रतिबंध

सरकार रियल मनी गेम्स के तहत कई स्तरों पर कड़े प्रावधान किए जाएंगे –

1. **बैंकिंग लेन-देन पर रोक:** इसके जरिए सीधे वित्तीय लेन-देन को बैंकिंग प्रणाली से रोक दिया जाएगा।
2. **विज्ञापन और प्रचार पर प्रतिबंध:** इन गेम्स के किसी भी प्रकार के विज्ञापन और प्रचार-प्रसार पर पूरी तरह रोक होगी।
3. **अवैध गेमिंग प्लेटफॉर्म्स पर कार्रवाई:** बिना रजिस्ट्रेशन वाले प्लेटफॉर्म्स को अवैध माना जाएगा।
   - निगरानी के लिए एक **स्वतंत्र नियामक प्राधिकरण** बनाया जाएगा।
4. **कठोर दंड का प्रावधान**
   - अवैध गेमिंग प्लेटफॉर्म चलाने वालों को **3 साल की जेल** या **1 करोड़ रुपये जुर्माना**।
   - विज्ञापन करने वालों को **2 साल की जेल** या **50 लाख रुपये जुर्माना**।
   - वित्तीय संस्थान यदि इसमें शामिल पाए जाते हैं, तो **3 साल की जेल** या **1 करोड़ रुपये जुर्माना**।
5. **बार-बार अपराध पर सख्ती**
   - दोहराए गए अपराधों में और लंबी जेल की सजा व ज्यादा जुर्माना। कुछ अपराध **गैर-जमानती** होंगे।
6. **अधिकारियों के विशेष अधिकार**
   - संपत्ति जब्त करने का अधिकार।
   - बिना वारंट गिरफ्तारी करने का अधिकार।

भारत में ऑनलाइन गेमिंग इंडस्ट्री

तेजी से बढ़ता सेक्टर – भारत में ऑनलाइन गेमिंग का विस्तार बहुत तेज़ी से हुआ है।

- 2020 में गेमर्स की संख्या: **36 करोड़**
- 2024 तक गेमर्स की संख्या: **50 करोड़+**

रियल मनी गेमिंग (RMG) का प्रभाव –

- लगभग **45 करोड़ लोग हर साल** इसमें भाग लेते हैं।
- इनसे खिलाड़ियों को लगभग **20,000 करोड़ रुपये का नुकसान** होता है।

भारत-चीन विशेष प्रतिनिधियों की वार्ता / India China Special Representatives' Dialogue

संदर्भ:

भारत और चीन के बीच हाल ही में **विशेष प्रतिनिधि वार्ता का 24वां दौर** आयोजित किया गया। यह वार्ता द्विपक्षीय संबंधों में स्थिरता, सीमा मुद्दों के समाधान और आपसी विश्वास को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम मानी जा रही है। दोनों देशों के बीच यह संवाद ऐसे समय में हुआ है जब सीमा पर शांति और स्थिरता कायम रखना, साथ ही राजनीतिक व आर्थिक सहयोग को आगे बढ़ाना, साझा प्राथमिकताओं में शामिल है।

संवाद के मुख्य परिणाम-

1. व्यापार और संपर्क:

- भारत और चीन के बीच **सीधी उड़ानें फिर से शुरू** होंगी।
- **पर्यटकों, व्यवसायियों, मीडिया और अन्य वर्गों** के लिए वीज़ा सुविधा दी जाएगी।
- सीमा व्यापार फिर से शुरू होगा –
    - **लिपुलेख दर्रा, शिपकी ला दर्रा, नाथु ला दर्रा**
- व्यापार और निवेश प्रवाह को बढ़ावा मिलेगा। चीन ने भारत की प्रमुख चिंताओं पर ध्यान दिया जैसे-
    - उर्वरक, दुर्लभ खनिज, टनल बोरिंग मशीनें

2. जन संपर्क को बढ़ावा:

- **कैलाश मानसरोवर यात्रा** फिर से शुरू होगी।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान** पर सहमति बनी।
- वर्ष **2026 में भारत में तीसरी उच्च स्तरीय तंत्र बैठक (High-Level Mechanism)** आयोजित होगी।

3. अंतर-सीमा नदियों पर सहयोग:

- चीन ने आपातकालीन स्थिति में **हाइड्रोलॉजिकल डाटा साझा करने** पर सहमति जताई।
- भारत ने चीन की **यारलुंग सांगपो (ब्रह्मपुत्र) पर मेगा बांध निर्माण** को लेकर चिंता जताई।

यात्रा का महत्व

- **75वीं वर्षगांठ:** वर्ष 2025 भारत-चीन के राजनयिक संबंधों की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ है। दोनों देशों ने इस अवसर को नए सहयोग के साथ मनाने का संकल्प लिया।
- **भारत–चीन रीसेट:** यह मेल-मिलाप 2020 की झड़पों के बाद सैन्य और कूटनीतिक गतिरोध को समाप्त करने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है।
- **कज़ान बैठक 2024:** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग की कज़ान बैठक को संबंध सुधारने वाला निर्णायक मोड़ माना गया।
- **भूराजनीतिक पृष्ठभूमि:** यह मेल-मिलाप ऐसे समय में हो रहा है जब अमेरिका द्वारा हाल ही में लगाए गए टैरिफ के चलते भारत-अमेरिका व्यापारिक संबंध कमजोर हो रहे हैं।
- **मल्टीपोलैरिटी (बहुध्रुवीयता) पर ज़ोर:** भारत और चीन दोनों ने बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों देश एकतरफ़ावाद और पश्चिमी वर्चस्व का विरोध करना चाहते हैं।

संबंधों में चुनौतियाँ

1. **सीमा विवाद:** विभिन्न समझौतों और वार्ताओं के बावजूद वास्तविक सीमा विवाद अब तक सुलझ नहीं पाया है।
2. **विश्वास की कमी:** गालवान की घटना और 2013 से लगातार सीमा उल्लंघन (Depsang, Doklam, Pangong Tso) ने भारतीय नीति-निर्माताओं में अविश्वास की भावना को बनाए रखा है।
3. **ब्रह्मपुत्र पर चीन की गतिविधियाँ:** चीन के मेगा-डैम प्रोजेक्ट भारत के लिए पर्यावरणीय और सुरक्षा दृष्टि से चिंता का विषय बने हुए हैं।
4. **वैश्विक समीकरण:** अमेरिका, रूस और चीन के बीच भारत की रणनीतिक संतुलन नीति बेहद नाजुक बनी हुई है।
5. **चीन–पाकिस्तान कारक:** चीन और पाकिस्तान की नज़दीकी, विशेषकर *चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC)*परियोजना, भारत के लिए गहरी चिंता का विषय है।

आगे की राह:

1. **बहुपक्षीय सहयोग** – SCO, BRICS, G20 जैसे मंचों पर साझेदारी मज़बूत करें।
2. **नदी पारदर्शिता** – आँकड़े साझा कर सीमा-पार जल परियोजनाओं में विश्वास बढ़ाएँ।
3. **सीमा संवाद** – LAC पर तनाव घटाकर शांति सुनिश्चित करें।
4. **आर्थिक संतुलन** – व्यापार व निवेश आपसी लाभकारी हों, अति-निर्भरता से बचें।

अग्नि-5 / Agni-5

संदर्भ:

भारत ने अपनी पहली इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-5 का सफल परीक्षण कर लिया है। यह परीक्षण बुधवार को ओडिशा के चांदीपुर स्थित इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज में किया गया। इसे **स्ट्रैटेजिक फोर्सेज कमांड (Strategic Force Command)** की देखरेख में परीक्षण किया गया।

अग्नि-5: भारत की सबसे एडवांस मिसाइल और रणनीतिक अहमियत:

भारत ने अपनी रक्षा क्षमता को और मज़बूत करते हुए **इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल (ICBM) अग्नि-5** का सफल परीक्षण किया है। यह DRDO द्वारा विकसित अत्याधुनिक मिसाइल है, जिसकी रेंज **5,000 किमी से अधिक** है।

प्रमुख विशेषताएँ:

- **MIRV तकनीक:** एक साथ कई टारगेट नष्ट करने की क्षमता।
- **वॉरहेड क्षमता:** 1.5 टन परमाणु हथियार या 7.5 टन बंकर बस्टर ले जाने में सक्षम।
- **डिज़ाइन:** 17 मीटर लंबी, 2 मीटर चौड़ी, 50 टन वजनी और तीन चरणों वाला ठोस ईंधन।
- **लॉन्च सिस्टम:** रोड-मोबाइल और कैनिस्टराइज्ड, जिससे तुरंत तैनात किया जा सके।
- **नेविगेशन:** रिंग लेज़र जायरोस्कोप और उन्नत गाइडेंस सिस्टम, जो इसे बेहद सटीक बनाते हैं।

रणनीतिक अहमियत:

- पाकिस्तान, चीन, तुर्किये सहित एशिया व यूरोप के हिस्सों तक मार करने में सक्षम।
- दुश्मन के **न्यूक्लियर सिस्टम, रडार, कंट्रोल सेंटर और बंकर** नष्ट करने की ताक़त।
- भारत की **परमाणु प्रतिरोधक क्षमता** और सामरिक स्थिति को मज़बूत करता है।

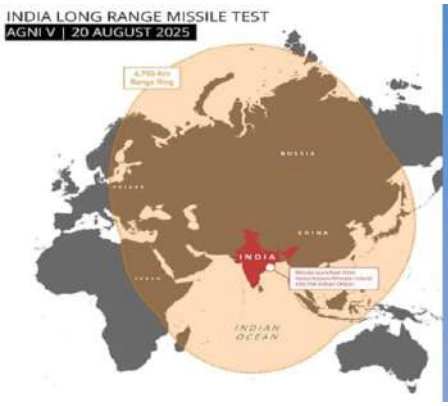

MIRV तकनीक क्या है?

MIRV (Multiple Independently Targetable Reentry Vehicle) तकनीक एक मिसाइल को एक साथ कई अलग-अलग लक्ष्यों पर हमला करने में सक्षम बनाती है।

- एक ही मिसाइल से सैकड़ों किलोमीटर दूर स्थित कई जगहों पर वारहेड गिराए जा सकते हैं।
- इसके लिए ज़रूरी है –
  - इंटरकॉन्टिनेंटल मिसाइलें
  - छोटे और हल्के वारहेड
  - सटीक गाइडेंस सिस्टम
  - अलग-अलग लक्ष्यों पर वारहेड रिलीज की क्षमता

क्यों है खास?

- MIRV तकनीक विकसित करना बेहद जटिल है।
- यह एक देश की **सामरिक (Strategic) क्षमता** का महत्वपूर्ण संकेत माना जाता है।
- कुछ ही देशों ने इसे हासिल किया है।

किन देशों के पास है?

- **रूस, चीन, अमेरिका, फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम**
- माना जाता है कि **इजरायल** के पास भी हो सकती है
- **पाकिस्तान** भी इसे विकसित करने की दिशा में काम कर रहा है।

क्या है स्ट्रैटेजिक फोर्सेज कमांड (SFC)?

- **परिभाषा:** स्ट्रैटेजिक फोर्सेज कमांड (SFC) भारत का एकीकृत त्रि-सेवा (थल, जल, वायु) कमांड है। इसका मुख्य कार्य देश के **सामरिक और रणनीतिक परमाणु हथियारों का प्रबंधन और संचालन** करना है।
- **भूमिका:** यह कमांड **न्यूक्लियर कमांड अथॉरिटी (NCA)** के तहत काम करता है और सुनिश्चित करता है कि भारत की सभी परमाणु संपत्तियों पर पूर्ण **कमांड और कंट्रोल** रहे।
- **इतिहास:** SFC की स्थापना **4 जनवरी 2003** को तत्कालीन प्रधानमंत्री **अटल बिहारी वाजपेयी** के नेतृत्व में हुई थी। सभी सामरिक बलों का संचालन इसके अधीन आता है।

रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र की भागीदारी / Private sector participation in defence production

संदर्भ:

भारत में **रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र की भागीदारी रिकॉर्ड** स्तर पर पहुँच गई है। रक्षा उत्पादन विभाग के अनुसार, वित्त वर्ष 2024-25 में कुल ₹1,50,590 करोड़ के रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र का योगदान ₹33,979 करोड़ रहा, जो कुल उत्पादन का 22.56% है। यह 2016-17 के बाद से सबसे उच्च निजी भागीदारी है, जब यह हिस्सा 19% था।

भारत में रक्षा उत्पादन:

- **क्षेत्रीय योगदान:** वित्त वर्ष 2024-25 में रक्षा सार्वजनिक उपक्रमों (DPSUs) ने कुल रक्षा उत्पादन में 57.50% योगदान दिया। भारतीय आयुध कारखानों का योगदान 14.49% और गैर-रक्षा सार्वजनिक उपक्रमों का योगदान 5.4% रहा।
- **रक्षा बजट वृद्धि:** वर्ष 2013-14 में रक्षा बजट ₹2.53 लाख करोड़ था, जो 2025-26 में बढ़कर ₹6.81 लाख करोड़ हो गया।
- **उच्चतम उत्पादन उपलब्धि:** 2024-25 में भारत ने अब तक का सर्वोच्च रक्षा उत्पादन ₹1.50 लाख करोड़ दर्ज किया, जो 2014-15 के ₹46,429 करोड़ से तीन गुना से अधिक है।
- **स्वदेशी उत्पादन में वृद्धि:** वर्तमान में 65% रक्षा उपकरण देश में निर्मित हो रहे हैं। पहले 65-70% उपकरण आयात पर निर्भर थे।
- **भविष्य का लक्ष्य:** भारत का लक्ष्य 2029 तक रक्षा उत्पादन को ₹3 लाख करोड़ तक पहुँचाना है, जिससे देश एक वैश्विक रक्षा विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित हो सके।

रक्षा निर्यात में वृद्धि:

- भारत के रक्षा निर्यात में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2013-14 में जहाँ यह केवल ₹686 करोड़ था, वहीं 2024-25 में बढ़कर ₹23,622 करोड़ हो गया, जो 34 गुना वृद्धि है।
- भारत का रक्षा निर्यात पोर्टफोलियो विविध है, जिसमें बुलेटप्रूफ जैकेट, चेतक हेलीकॉप्टर, तेज गति वाले इंटरसेप्टर बोट्स और हल्के टॉरपीडो शामिल हैं।
- भारत आज 100 से अधिक देशों को रक्षा उपकरण निर्यात करता है। वर्ष 2023-24 में अमेरिका, फ्रांस और आर्मेनिया इसके प्रमुख गंतव्य रहे।

सार्वजनिक और निजी क्षेत्र का योगदान

- कुल रक्षा उत्पादन में सार्वजनिक क्षेत्र (DPSUs और अन्य यूनिट्स) का हिस्सा लगभग 77% है, जबकि निजी क्षेत्र का योगदान 23% है।
- निजी क्षेत्र की भागीदारी लगातार बढ़ रही है, जो FY 2023-24 में 21% से बढ़कर FY 2024-25 में 23% हो गई है।
- DPSUs की ग्रोथ FY 2024-25 में वर्ष-दर-वर्ष (YoY) 16% रही।
- निजी क्षेत्र की ग्रोथ इसी अवधि में 28% YoY रही, जो रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में इसकी बढ़ती भूमिका को दर्शाती है।

नीतिगत सुधार और आत्मनिर्भरता अभियान:

- सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में निरंतर वृद्धि का मुख्य कारण है व्यापक नीतिगत सुधार और ease of doing business उपाय।
- पिछले एक दशक में सरकार ने indigenisation (स्वदेशीकरण) पर विशेष जोर दिया है।
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत पहल ने रक्षा क्षेत्र में आयात पर निर्भरता घटाने और मजबूत घरेलू रक्षा निर्माण पारिस्थितिकी तंत्र तैयार करने में अहम भूमिका निभाई है।

आगे की राह

- **कौशल विकास:** उभरती रक्षा तकनीकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू कर कुशल कार्यबल तैयार करना।
- **संयुक्त उपक्रम:** विदेशी रक्षा कंपनियों के साथ co-development और technology transfer के लिए साझेदारी को बढ़ावा देना।
- **स्टार्ट-अप्स को बढ़ावा देना:** iDEX और ADITI जैसी योजनाओं के तहत रक्षा start-ups को AI, क्वांटम, स्पेस और साइबर क्षेत्रों में सहयोग प्रदान करना।
- **समानअवसर:** पारदर्शी procurement फ्रि लागू कर निजी कंपनियों को DPSUs के साथ निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा का मौका देना।
- **निर्यात तंत्र को मज़बूत करना:** नए वैश्विक बाज़ारों में पहुँच बढ़ाने और निजी कंपनियों को प्रोत्साहन देकर निर्यात गंतव्यों का विविधीकरण करना।

वैश्विक महत्त्वपूर्ण कृषि धरोहर प्रणाली / GIAHS

संदर्भ:

भारत कृषि धरोहर के मामले में वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान रखता है। फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइजेशन (FAO) के अनुसार, वर्तमान में भारत में तीन ऐसे "ग्लोबली इम्पॉर्टेंट एग्रीकल्चरल हेरिटेज सिस्टम्स" (GIAHS) मौजूद हैं, जिन्हें वैश्विक कृषि महत्व के रूप में मान्यता दी गई है।

वैश्विक महत्त्वपूर्ण कृषि धरोहर प्रणाली (GIAHS)

- **परिभाषा** : ये सामुदायिक रूप से प्रबंधित कृषि प्रणालियाँ हैं जो कृषि-जैव विविधता, पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत को जोड़कर आजीविका और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं।
- **मान्यता** : FAO द्वारा मान्यता प्राप्त। अब तक 29 देशों में **99 प्रणालियाँ** शामिल की गईं।

हाल की नई शामिल प्रणालियाँ

1. **ताजिकिस्तान** : पहाड़ी कृषि-पशुपालन प्रणाली
2. **दक्षिण कोरिया** : पाइन ट्री एग्रोफॉरेस्ट्री और पारंपरिक बांस-मछली प्रणाली।
3. **पुर्तगाल** : कृषि-वनीकरण-पशुपालन प्रणाली।

भारत की GIAHS प्रणालियाँ

1. **कोरापुट क्षेत्र, ओडिशा**
   - पहाड़ी धान की खेती और स्वदेशी चावल किस्मों की विविधता।
   - औषधीय पौधे और आदिवासी पारंपरिक ज्ञान से जुड़ी धरोहर।
2. **कुट्टनाड प्रणाली, केरल**
   - **समुद्र-स्तर से नीचे खेती का अनोखा मॉडल**।
   - धान के खेत, नारियल बगीचे, अंतर्देशीय मत्स्य पालन और शंख संग्रहण।
3. **कश्मीर की केसर धरोहर**
   - पारंपरिक केसर खेती, अंतरफसली खेती और जैविक पद्धतियाँ।
   - जैव विविधता व मृदा स्वास्थ्य को बढ़ावा।

खारे पानी के मगरमच्छ / Saltwater Crocodiles

संदर्भ:

हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट "Population Assessment and Habitat Ecology Study of Saltwater Crocodiles in Sundarbans 2025" में सुन्दरबन बायोस्फियर रिजर्व (SBR) में साल्टवाटर मगरमच्छों की संख्या में वृद्धि को दर्शाया गया है।

खारे पानी का मगरमच्छ (Crocodylus Porosus)

भारत में खारे पानी के मगरमच्छ उड़ीसा और पश्चिम बंगाल के दलदली क्षेत्रों, नदियों, मैंग्रोव वनों तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के तटीय इलाकों में पाए जाते हैं। यह पृथ्वी पर पाया जाने वाला सबसे बड़ा जीवित सरीसृप (largest living reptile) है।

पारिस्थितिक महत्व (Ecological Significance):

यह एक *hypercarnivorous species* के रूप में पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखता है और मृत जीवों तथा जंगली अवशेषों को खाकर बहते जल को स्वच्छ करता है।

संरक्षण स्थिति (Conservation Status):

- **IUCN स्थिति:** *Least Concern*
- **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972** की अनुसूची-1 में सूचीबद्ध।

भारत में मगरमच्छ की प्रजातियाँ (Crocodiles Species in India):

भारत में मुख्यत: तीन प्रकार के मगरमच्छ पाए जाते हैं –

1. घड़ियाल (Gavialis Gangeticus)
2. खारे पानी का मगरमच्छ (Crocodylus Porosus)
3. मग्गर (Crocodylus Palustris)

उड़ीसा विशेष रूप से अनोखा है क्योंकि यहां तीनों प्रजातियों की जंगली आबादी पाई जाती है।

मन्नार की खाड़ी में प्रवालों (Corals) का पुनरुद्धार

संदर्भ:

तमिलनाडु के तट से लगे मन्नार की खाड़ी में स्थित कोरल रीफ्स ने दो दशकों से अधिक की वैज्ञानिक संरक्षण और पुनर्स्थापन प्रयासों के चलते महत्वपूर्ण पुनर्जीवन देखा है।

प्रवाल (Corals) के बारे में

- **परिचय:** प्रवाल (Corals) अकशेरुकी जीव हैं, जो *Cnidaria* नामक बड़े समूह के अंतर्गत आते हैं।
- **निर्माण:** प्रवाल छोटे-छोटे कोमल जीवों (*polyps*) से बनते हैं। ये जीव सुरक्षा हेतु अपने चारों ओर चूने जैसा कठोर आवरण (कैल्शियम कार्बोनेट) बनाते हैं।
- **प्रवाल भित्तियाँ (Coral Reefs):** असंख्य *polyps* मिलकर विशाल कार्बोनेट संरचनाएँ बनाते हैं, जिन्हें प्रवाल भित्तियाँ कहते हैं।
- **रूप-रंग (Appearance):** प्रवाल लाल से लेकर बैंगनी और नीले रंग तक पाए जाते हैं, लेकिन प्राय: भूरे और हरे रंग की छाया में अधिक मिलते हैं।

भारत में प्रवाल भित्तियाँ

- कच्छ की खाड़ी (*Gulf of Kutch*)
- मन्नार की खाड़ी (*Gulf of Mannar*)
- अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह
- लक्षद्वीप द्वीप
- मालवन क्षेत्र

मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar)

- **विशेषता:** यह भारत के प्रवाल-समृद्ध क्षेत्रों में से एक है, जो लगभग 100 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली है। यहाँ प्रवाल की लगभग 117 प्रजातियाँ पाई जाती हैं।
- **स्थान:** यह लाक्षद्वीप सागर का एक उथला बड़ा खाड़ी क्षेत्र है, जो भारत के दक्षिण-पूर्वी छोर और श्रीलंका के पश्चिमी हिस्से के बीच स्थित है।
- **सीमाएँ:**
  - रामेश्वरम द्वीप
  - आदम (रामसेतु) ब्रिज – छोटे-छोटे टापुओं और रेत के टीले की श्रृंखला
  - मन्नार द्वीप
- **आकार:** लगभग 130–275 किमी चौड़ी और 160 किमी लंबी।

यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन / EAEU

संदर्भ:

भारत और यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU) ने फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (FTA) वार्ता शुरू करने के लिए टर्म्स ऑफ रेफरेंस (ToR) पर हस्ताक्षर किए हैं।

यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU) के बारे में

- **स्वरूप:** यह एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जो पूर्व सोवियत देशों के बीच क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण (Regional Economic Integration) को बढ़ावा देता है।
- **स्थापना:** *यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन संधि* (Treaty on the Eurasian Economic Union) के माध्यम से गठित। यह संधि **29 मई 2014** को हस्ताक्षरित हुई और **1 जनवरी 2015** से प्रभावी हुई।
- **सदस्य देश:** इस संघ में कुल **5 देश** शामिल हैं – **रूस, बेलारूस, कज़ाख़स्तान, किर्गिस्तान और आर्मेनिया**।

भारत और यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (EAEU) व्यापार संबंध:

- **व्यापार:** वर्ष 2024 में भारत और EAEU के बीच व्यापार 69 अरब अमेरिकी डॉलर रहा, जो 2023 की तुलना में 7% अधिक है।
- **संयुक्त GDP:** भारत और EAEU देशों की कुल जीडीपी 6.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर है।